लखनऊ
जागरण सिटी
दैनिक जागरण | लखनऊ, 11 अगस्त 2017 | www.jagran.com

शूटिंग में बेटी को याद करते रहे संजय दत्त |||

हर माह लाखों रुपये की बिजली बचाएगा मेट्रो

जासं, लखनऊ : मेट्रो हर माह लाखों रुपये की बिजली बचाएगा। लखनऊ मेट्रो कार्यशाला की क्षत पर लगने वाले सोलर प्लांट से एक मेगावॉट बिजली पैदा करेगा। यह बिजली डिपो में इस्तेमाल होने के साथ ही आसपास के स्टेशनों पर भी भेजी जाएगी। सेकेंड फेस में नार्थ साउथ कारीडोर के सभी स्टेशनों पर सोलर प्लांट लगाए जाएंगे। कार्यशाला में अस्सी मेट्रो की साफ सफाई के अलावा कंट्रोल सेंटर, इंस्पेक्शन वे, प्रशिक्षिण केंद्र, ऑफिसर के चेंबरों में होने वाली बिजली सप्लाई इन्हीं सोलर प्लांट से दी जाएगी। लखनऊ मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (एलएमआरसी) का उद्देश्य है कि हर माह सिर्फ डिपो से लाखों रुपये की बिजली बचाए। केंद्र सरकार की नीतियों के अनुरूप कार्यदायी संस्था एक साल के भीतर इस टारगेट को पूरा करेंगी। करोड़ों रुपये के प्रोजेक्ट की लागत चंद वर्षो में मेट्रो सोलर प्लांट से पैदा होने वाली बिजली से निकाल लेगा। मेट्रो ने डिपो में स्थापित बिजली घर की छत पर भी दस किलोवॉट का सोलर प्लांट लगाया गया है। पैनल लगने के बाद से बिजली के बिल में 25 फीसद कमी आई है। वहीं गोमती नगर स्थित लखनऊ मेट्रो कार्यालय में करीब एक साल पहले ही सोलर प्लांट छत पर लगाए गए थे। इनसे प्रतिमाह 12 किलोवॉट बिजली का इस्तेमाल परिसर में किया जा रहा है।

खुद से तैयार कर रहे अपने हिस्से की बिजली

गर्मी की चटक धूप से यूं तो लोग परेशान रहते हैं, लेकिन राजधानी के कुछ लोगों ने प्रकृति के इस मुफ्त में मिलने वाले तोहफे से घर को रोशन करने के साथ-साथ ठंडा भी करने का रास्ता अपना लिया है। अब यह धूप उन्हें कूल कर रही है। यही नहीं, सर्दी में गर्मी का मजा भी दे रही है, वह भी बिल्कुल मुफ्त। यह सब संभव हो रहा है रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट से। इससे जेब तो गर्म हो ही रही है, साथ ही पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिल रही है। स्थिति यह है कि राजधानी में ऐसे लोगों की संख्या दिनों दिन बढ़ रही है, जो घर की छत पर बिजली तैयार कर खुद तो इस्तेमाल कर ही रहे हैं साथ ही अतिरिक्त बिजली ग्रिड में देकर उन लोगों की मदद कर रहे हैं जिनकी जिंदगी अंधेरे में गुजर रही है। जागरण संवाददाता **रूमा सिन्हा** ने ऐसे ही कुछ जागरूक शहरवासियों से बातचीत की, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण के साथ ही स्वावलंबी बनने की मिसाल पेश की है...

सौर ऊर्जा से बने पर्यावरण प्रहरी

गोमती नगर में रहने वाले डॉ.भरत राज सिंह का घर सौर ऊर्जा से संचालित हैं। डॉ. सिंह बड़े फक्र से कहते हैं कि 'राजधानी में सबसे पहला घर उनका ही था, जहां रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट लगा।' डॉ.सिंह स्वयं पर्यावरणविद भी हैं। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण में अपना सहयोग देने के लिए सौर ऊर्जा से बिजली पैदा करने की ठानी। वह कहते हैं कि यदि शहर में दस लाख घरों में सोलर बिजली पैदा की जाए तो कुल 2000 मेगावॉट बिजली तैयार की जा सकती है। जाहिर है कि इस बिजली का उपयोग उन लोगों के घरों को रोशन करने में किया जा सकता है, जहां अंधेरा है।

> मेट्रो कार्यालय व रिसीविंग सब स्टेशन पर सोलर पैनल लगे हैं। इससे 25 फीसद बिजली का बिल कम हुआ है। डिपो में कार्यशाला की छत पर पैनल लगाने का काम चल रहा है। छह माह में टारगेट पूरा हो जाएगा।
>
> **अमित कुमार श्रीवास्तव,** वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी, एलएमआरसी

गुणा-गणित नहीं, बस धरती की है चिंता

पिकनिक स्पॉट रोड निवासी नीता सिंह कहती हैं कि सौर ऊर्जा से जब बिजली तैयार की जा सकती है तो हम क्यों पारंपरिक तरीके से तैयार बिजली पर निर्भर रहें, जिससे पर्यावरण भी दूषित होता है। वह कहती हैं कि गणित के चक्कर में मैं ज्यादा नहीं पड़ती मुझे तो बस पर्यावरण की चिंता है। मुझे खुशी है कि अपने हिस्से की बिजली मैं खुद धूप से तैयार करती हूं।

अपने साथ ही अगली पीढ़ी की भी सोचें

गोमती नगर निवासी अभय सिंह व पत्नी नीलम को इस बात की चिंता है कि अगली पढ़ी को आखिर हम कैसा पर्यावरण सौंपेंगे। इसी चिंता के तहत राठौर ने रूफ टॉप सोलर पॉवर प्लांट ही नहीं लगाया, बल्कि अपने घर में वर्षा जल संचयन के भी इंतजाम कर रखे हैं। उनका कहना है कि प्रकृति ने उन्हें सब कुछ सौंपा है जिसकी हमें आवश्यकता होती है। ऐसे में कृत्रिम चीजों का सहारा क्यों लिया जाए।

डॉ.भरत राज सिंह के घर पर लगा पावर प्लांट

पर्यावरण संरक्षण

वाट्सएप से प्राप्त करें जानकारी

यदि आप रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट से जुड़ी जानकारी चाहते हैं तो नेडा अधिकारी के मोबाइल नंबर 9415609077 पर अपना बिजली का बिल वाट्सएप कर दें। आपको वाट्सएप पर पूरी जानकारी मिल जाएगी।

एक किलोवॉट से बनेगी चार-पांच यूनिट बिजली

- एक किलोवॉट सोलर पावर प्लांट से हर दिन चार-पांच यूनिट बिजली तैयार होती है।
- भारत सरकार रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट के लिए 30 फीसद सब्सिडी देती है।
- स्वीकृत लोड से ज्यादा का पॉवर प्लांट नहीं लगवा सकते हैं।
- प्रति किलोवॉट लगभग 70 हजार रुपये का खर्च आता है।
- सोलर पैनल की वारंटी 25 वर्ष और सिस्टम की वारंटी पांच साल की होती है।
- तीन-चार साल में लागत निकल आती है फिर बिजली फ्री।

दूसरे के घर में भी लाता हूं उजाला

अलीगंज निवासी राकेश कुमार जायसवाल पेशे से बिजनेसमैन हैं। वह कहते हैं कि मित्र ने सोलर पॉवर प्लांट के फायदे गिनाए तो उन्होंने इसे लगवाने का निश्चय किया। वह कहते हैं कि अच्छी बात यह है कि इसमें न तो किसी तरह की मेंटीनेंस की जरूरत पड़ती है। दिन निकलता है और बिजली बनना शुरू हो जाती है। इस बिजली का खुद तो प्रयोग करते ही हैं साथ ही ग्रिड में भी जाती है। इससे दूसरे के भी घर में उजाला होता है।

ऊर्जा संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी

जानकीपुरम निवासी हीवेट पॉलीटेक्निक के पूर्व प्रिंसिपल वीके अवस्थी का कहना है कि अब अपना पॉवर सिस्टम है। इससे हर माह जो बिजली का खर्च आता था उसमें तो राहत मिली ही हैं दूसरा राष्ट्रहित में भी छोटा सा ही सही हम भी कुछ सहयोग कर पा रहे हैं इसकी संतुष्टि है। अवस्थी कहते हैं कि ऊर्जा संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है। सरकार इस पर सब्सिडी भी दे रही है। ऐसे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसके लिए आगे आना चाहिए।

...दूर हो गई बिजली की टेंशन

भीखमपुरवा कालोनी में रहने वाले बैंक अधिकारी सतीश चंद्र गौतम काफी संतुष्ट हैं। वह कहते हैं कि उन्होंने पांच किलोवॉट का पॉवर प्लांट लगवाया है। अब उन्हें बिजली के बिल की चिंता नहीं होती हैं, चूंकि बिजली वह खुद बना रहे हैं। इसलिए अब घर में काफी सारे इलेक्ट्रानिक उपकरणों का प्रयोग भी किया जा रहा है। इंडक्शन पर आराम से खाना बनता है। वह कहते हैं कि इस सिस्टम को लगाकर मेरा बिजली के बिल का सारा टेंशन दूर हो चुका है। एसी भी लगवा लिए हैं।

ऐसे काम करता है पावर प्लांट

ग्रिड कनेक्टेड रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट में छत पर लगे सोलर पैनल के माध्यम से बिजली तैयार होती है। तैयार बिजली 'बाई डायरेक्शनल मीटर' के जरिए घर में इस्तेमाल होती है और शेष बिजली ग्रिड में चली जाती है। मीटर में सौर ऊर्जा से तैयार बिजली व आपके द्वारा खर्च की गई बिजली का पूरा लेखाजोखा रिकार्ड होता है। यदि प्रयोग से ज्यादा बिजली तैयार हो रही है तो उसका भुगतान आपको यूपीपीसीएल द्वारा कर दिया जाता है। इस प्रकार आप अपने लिए तो बिजली बनाते ही हैं और अतिरिक्त बिजली किसी और के घर को रोशन करने के काम आती है।